

डॉ. जॉन ओसवाल्ट, किंग्स, सत्र 26, भाग 1

2 राजा 17, भाग 1

© 2024 जॉन ओसवाल्ट और टेड हिल्डेब्रांट

जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है, यह एक काला अध्याय है। यह वास्तव में एक लंबे समय से चली आ रही गिरावट का समापन है। हम इसे हमेशा से देखते आ रहे हैं, और अब यह अपने समापन पर आ गया है।

इस समय तक, इस्राएल राष्ट्र का जो कुछ बचा है, वह है सामरिया शहर, जो इस्राएल के मध्य पहाड़ी इलाकों में है। राष्ट्र के बाकी हिस्से को विभिन्न असीरियन हमलों ने खा लिया था, और इसलिए दीवारों से घिरा शहर सामरिया ही अकेला खड़ा है। दक्षिण में, आहाज, जो मूल रूप से असीरियनों के हाथों बेचा जा चुका है, सिंहासन पर है, और उसका बेटा हिजकिय्याह उसके साथ सह-शासक है, संभवतः सरकार में असीरियन समर्थक गुट द्वारा उसे मजबूर किया गया है।

इस समय हिजकिय्याह की उम्र शायद किशोरावस्था में ही होगी। यह बताना थोड़ा मुश्किल है, क्योंकि जैसा कि हमने पिछले सप्ताह देखा, हिजकिय्याह की तिथियों को लेकर कुछ समस्या है, लेकिन किसी भी स्थिति में, यही स्थिति है, और होशे उत्तर में राजा है। यहोवा बचाता है।

यही उसके नाम का अर्थ है। और फिर भी, आगे विपत्ति है। अब, बहुत ही रोचक श्लोक 2 पर ध्यान दें। उसने बुराई की, यह होशे है, उसने यहोवा की नज़र में बुराई की, लेकिन इस्राएल के उन राजाओं की तरह नहीं जो उससे पहले थे।

वह उत्तर का एकमात्र राजा है जिसके बारे में यह नहीं कहा गया है कि उसने यारोबाम के मार्ग का अनुसरण किया। हम ठीक से नहीं जानते कि इसका क्या मतलब था। क्या इसका मतलब यह था कि उसने उन सोने के बछड़ों को त्याग दिया था जिन्हें यारोबाम ने लगभग 200 साल पहले बनवाया था? हम नहीं जानते, और यह बहुत दिलचस्प है।

क्या वह वास्तव में उस चीज़ से भयभीत है जिसका उन्हें सामना करना पड़ रहा है, जो उनके सामने है, शक्तिशाली असीरियन सेना? हम नहीं जानते, लेकिन किसी भी दर पर, अब बहुत देर हो चुकी है। और मुझे लगता है कि यह यहाँ सबक में से एक है। आप पाप कर सकते हैं, और पाप कर सकते हैं, और पाप कर सकते हैं, और अंत में निर्णय ले सकते हैं, ठीक है, मुझे लगता है कि मैं उससे थोड़ा पीछे हट जाऊंगा, और अब बहुत देर हो चुकी है।

ऐसा नहीं है कि भगवान माफ नहीं करेंगे, ऐसा नहीं है कि भगवान माफ नहीं कर सकते, बल्कि बस इतना है कि हम खुद को ऐसी स्थिति में ले आते हैं जहाँ हम वास्तव में पश्चाताप नहीं कर सकते। हम थोड़ा बेहतर कर सकते हैं। हम कुछ पापों को खत्म कर सकते हैं, लेकिन पूरी तरह से, पूरी तरह से पश्चाताप? नहीं, नहीं, यह बहुत कठिन है।

हमने इस बारे में पहले भी थोड़ी बात की है कि दुनिया इस तरह से बनाई गई है कि यह हमें उस रास्ते पर चलने में मदद करेगी जिसे हमने चुना है जब तक कि हम उस बिंदु पर नहीं पहुंच जाते

जहां हम वास्तव में कोई अन्य निर्णय लेने में असमर्थ हैं। यही फिरौन के दिल के कठोर होने का कारण है। ऐसा नहीं है कि भगवान एक अच्छे, दयालु आदमी से कहता है, नहीं, तुम उन्हें जाने नहीं दोगे।

नहीं, वह एक ऐसा व्यक्ति है जो अपने पूरे जीवन में ईश्वर रहा है, और यह सोचना कि कोई अन्य ईश्वर होने का दावा करने वाला व्यक्ति उसे बताएगा कि उसे क्या करना है, संभव नहीं था। इसलिए, वह दूसरी आयत बहुत ही उत्तेजक है क्योंकि हम आश्चर्य करते हैं कि आखिर वहाँ क्या हुआ, क्या हुआ। इसलिए, होशे ने विद्रोह किया।

अब, वह ऐसा क्यों करेगा? इसमें कहा गया है कि अब वह अशूर के राजा को कर नहीं देता था जैसा कि वह हर साल देता था। अब, जैसा कि मैंने कहा, उसका राज्य मूल रूप से एक दीवार वाला शहर है और इससे ज़्यादा कुछ नहीं। और यहाँ दुनिया की सबसे शक्तिशाली सेना है, और फिर भी वह विद्रोह करता है।

वह ऐसा क्यों करेगा? हाँ, हाँ, यह मानव स्वभाव है कि वह समर्पण को अस्वीकार कर दे, भले ही विकल्प विनाश ही क्यों न हो। ऐसा क्यों है? हम कहते हैं कि यह मानव स्वभाव है। यह मानव स्वभाव क्यों है? यह निम्न मानव स्वभाव है, हाँ, हाँ।

हाँ, हाँ, हमें यह हमारे माता-पिता, हमारे पहले माता-पिता से मिलता है। बिलकुल, बिलकुल। अगर मैं अपना जीवन पूरी तरह से भगवान को सौंप दूँ और अपनी ज़मीन से हाथ हटा लूँ, तो कोई नहीं बता सकता कि वह मेरे साथ क्या करेगा।

वह मुझे केंटकी या अफ्रीका या किसी और जगह भेज सकता है। मेरा मतलब है, नहीं, मैं सिर्फ़ अपने आप पर भरोसा करता हूँ, और मैं अपनी राह पर चलूँगा, किसी और की नहीं। मानवता की सबसे निचली पंक्ति में, यह वहीं खड़ा है।

मैं खुद का हूँ। और मैं अपना रास्ता अपनाऊँगा और कोई भी मुझे यह नहीं बताएगा कि मुझे क्या करना है क्योंकि हम भगवान से डरते हैं। हम उस पर भरोसा नहीं करेंगे।

इसलिए, कोई समझौता करने के बजाय, कोई रास्ता निकालने की कोशिश करने के बजाय, यह विद्रोह है। अब, जो सवाल उठता है, वह यह है कि इस बारे में क्या? हमारे देश का जन्म एक क्रांति में हुआ था। जॉन वेस्ले ने अमेरिकी क्रांति की निंदा करते हुए एक बहुत ही कठोर पुस्तिका लिखी।

इस बारे में क्या? क्या सभी क्रांतियाँ ग़लत हैं? अगर नहीं, तो कब नहीं? मेरी कब होगी? ठीक है। ठीक है, ठीक है। अगर कोई धार्मिक कारण है, अगर कोई धार्मिक औचित्य है।

ठीक है, ठीक है, ठीक है। और यह निश्चित रूप से तर्क दिया जा सकता है कि वास्तव में उन्होंने कोई मध्य मार्ग खोजने की कोशिश की थी और संसद और जॉर्ज के मंत्रिमंडल ने मध्य मार्ग से इनकार कर दिया था। तो, ठीक है, शायद धार्मिक कारणों से, शायद अंतिम उपाय के रूप में।

मुझे नहीं लगता कि इस सवाल का कोई आसान जवाब है। आप यीशु को विद्रोह का नेतृत्व करते नहीं देखते। दरअसल, क्योंकि वह विद्रोह का नेतृत्व नहीं करना चाहता था, इसलिए उसे मार दिया गया।

इसलिए, मैं बस यह बात हमारे लिए सोचने के लिए रखता हूँ क्योंकि यह एक निरंतर मुद्दा है कि हम ईसाई के रूप में राज्य से कैसे संबंधित हैं और ईसाई के रूप में हमारे दायित्व हमें क्या कहते हैं। ठीक है, जब लोग शक्तिहीन होते हैं, तो उनके पास दंगा और विद्रोह करने के अलावा कोई दूसरा विकल्प नहीं होता है। फिर से, मैं इस संबंध में यीशु के बारे में सोचता हूँ, जो शक्तिहीन था और उसने खुद को मारे जाने दिया।

ठीक है, उनका मिशन अलग था। और फिर से, पूरा सवाल यह है कि आप नागरिक राज्य को ईसाई अनुभव से कैसे जोड़ते हैं। क्या आपका मतलब यीशु से है? हाँ, दूसरा आगमन पहले आगमन से थोड़ा अलग होगा।

हाँ, हाँ। तब वह राजा होगा। इसलिए, मैं यहाँ कोई उत्तर देने का प्रस्ताव नहीं रखता, लेकिन मुझे लगता है कि पूरा मुद्दा यह है... हम इसे कुछ हफ्तों में फिर से देखेंगे जब यहूदा का राजा सिदकिय्याह यिर्मयाह के इस दृढ़, दृढ़ आग्रह के विरुद्ध वही काम करेगा कि उसे ऐसा नहीं करना चाहिए।

इसलिए, मुझे लगता है कि मैं आपको और खुद को जहाँ छोड़ना चाहता हूँ, वह यह है कि हम नागरिक आवश्यकताओं के आधार पर अंततः गैर-ईसाई व्यवहार को कितनी आसानी से उचित ठहरा सकते हैं। और मुझे नहीं लगता कि हम इसे आसानी से दरकिनार कर सकते हैं। हमें इस मुद्दे का सामना करना होगा।

तो, द्वितीय विश्व युद्ध में कई लोगों के लिए, निर्णय यह था कि क्या मैं नहीं लड़ूंगा, या दुनिया भर में बुराई इतनी ज़ोरदार तरीके से फैलाई जा रही है कि मुझे अच्छाई के नाम पर लड़ना ही होगा? इसका कोई आसान जवाब नहीं है। कोई आसान जवाब नहीं है। लेकिन आखिरकार आपके और मेरे लिए सवाल यह है कि क्या मैं अपनी आत्मा की गहराई में एक विनम्र व्यक्ति हूँ? या यह एक दिखावा है? उस छोटे लड़के की पुरानी, पुरानी कहानी जिसके पिता ने कहा बैठ जाओ।

नहीं, बैठ जाओ। नहीं।

या तो तुम बैठ जाओ या फिर मैं तुम्हारे लिए बैठना मुश्किल कर दूँगा। छोटा लड़का बैठ गया। मैं बाहर से बैठा हूँ लेकिन अंदर से खड़ा हूँ।

हाँ। अधिकार रखने वाले लोगों के प्रति मेरा रवैया क्या है? उनके प्रति मेरा रवैया क्या है... और फिर से, मैं सुझाव दे रहा हूँ कि हमें कोई स्पष्ट विभाजन नहीं करना चाहिए। ओह, मैं मसीह के प्रति समर्पित हूँ।

वाशिंगटन में बस यही लोग हैं जिनके आगे मैं झुकता नहीं हूँ। क्योंकि वे बुरे हैं। आप सवाल पूछेंगे और शायद कुछ कहेंगे और एक समय ऐसा भी आ सकता है जब आपको ना कहना पड़े।

लेकिन मुसा ने भी परमेश्वर को मना कर दिया जब वे उसके अंदर जाकर बोलने के बारे में बहस कर रहे थे। वह नहीं चाहता था। और परमेश्वर ने कहा ठीक है, ठीक है, मैं तुम्हें हारून दे दूँगा।

मेरा मतलब है कि उस रिश्ते में कुछ देना और लेना था। और मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि हमें वहाँ बैठे रहना चाहिए, मेरा मतलब है कि अगर भगवान कुछ कहते हैं तो मैं ऐसा नहीं करूँगा। कम से कम मुझे उम्मीद है कि मैं ऐसा नहीं करूँगा।

लेकिन क्या आप जानते हैं कि मैं क्या कह रहा हूँ? मेरा मतलब है, यह वास्तव में नहीं है... हाँ, मैं आपकी बात सुन रहा हूँ। मेरा मतलब है, समर्पण दिखावा हो सकता है। खैर, मैं अच्छा नहीं हूँ, और मुझे कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं है, और मैं इसमें मदद नहीं कर सकता।

और मैं उस बारे में बात नहीं कर रहा हूँ। लेकिन मैं एक बुनियादी रूप से विद्रोही स्वभाव की बात कर रहा हूँ जो कहता है कि मैं वही करूँगा जो मुझे सही लगता है, जो मैं करना चाहता हूँ।

और मैं बस इतना कह रहा हूँ कि मुझे ज़रूरत है, और मैं यह सोचने की हिम्मत करता हूँ कि आपको लगातार खुद से पूछने की ज़रूरत हो सकती है, क्या मैं सच में, और मुझे लगता है कि यह वापस आता है, क्या मैं सच में भगवान पर भरोसा कर रहा हूँ? या क्या मैं हर समय अपनी उंगलियाँ क्रॉस करके रखता हूँ? मार्क? रोमियों 12 या रोमियों... क्या मेरे साथ व्यक्तिगत रूप से किए गए अन्याय और दूसरों के साथ होते अन्याय के बीच कोई अंतर नहीं है? बिल्कुल। मुझे बचाव में उठ खड़ा होना चाहिए, जबकि मेरे अपने जीवन में, मुझे ऐसा करना चाहिए... मुझे अपना बदला नहीं लेना चाहिए। बिल्कुल।

बिल्कुल। यहाँ हम देखते हैं कि मंदिर में यीशु बहुत क्रोधित थे क्योंकि उन लोगों के साथ क्या किया गया था जो पूजा करना चाहते थे, और दूसरे लोग इससे बहुत पैसा कमा रहे थे। खैर, मैं इसे बहुत आगे नहीं बढ़ाना चाहता, लेकिन मैं बस... अगर हम होशे के मूर्खतापूर्ण विद्रोह के बारे में बात करते हैं, तो हमें अपनी उंगलियाँ खुद पर भी फेरनी चाहिए।

अब, मैं चाहता हूँ कि आप यशायाह 28 को देखें। मुझे आशा है कि आप पढ़ सकते हैं कि मूल रूप से इस समय क्या लिखा गया है और इस समय उत्तर में नेतृत्व के बारे में यशायाह का क्या कहना है। आह, एप्रैम के मतवालों का गर्वित मुकुट, उसकी शानदार सुंदरता की लुप्त होती हुई महिमा जो शराब के नशे में चूर लोगों की समृद्ध घाटी के सिर पर है।

यहाँ उनके पास एक सुंदर मिश्रित रूपक है। सामरिया एक बहुत ही सुंदर गोल पहाड़ी की चोटी पर था और शहर पहाड़ी की चोटी पर बना हुआ था, जिसमें खंभों वाली दीवारें थीं। एप्रैम के शराबियों का गर्वित मुकुट और वह फिर से एक सुंदर मिश्रित रूपक देखता है, वह एक शराबी पार्टी देखता है जहाँ कुछ लोगों के सिर पर ओलंपिक विजेताओं की तरह पुष्पमालाएँ होती हैं, लैंपशेड नहीं, लेकिन वही विचार।

देखो, यहोवा के पास एक ऐसा व्यक्ति है जो ओलों की वर्षा के समान शक्तिशाली और बलवान है, और एक विनाशकारी तूफान है जो प्रचंड जल के तूफान के समान है जिसे उसने अपने हाथ से

धरती पर गिरा दिया है। एक मिनट रुको, अशशूरियों? एप्रैम के शराबियों का घमंडी मुकुट पैरों तले रौंदा जाएगा। इसकी शानदार सुंदरता का मुरझाता हुआ फूल, जो एक समृद्ध घाटी के शीर्ष पर है, गर्मियों से पहले पहले पके अंजीर की तरह होगा। जब कोई इसे देखता है, तो वह इसे अपने हाथ में लेते ही निगल जाता है।

उस दिन, सेनाओं का यहोवा अपने लोगों के बचे हुए लोगों के लिये महिमा का मुकुट और सुन्दरता का मुकुट ठहरेगा, और न्याय करनेवाले के लिये न्याय की आत्मा ठहरेगा, और फाटक पर लड़ाई को पीछे मोड़नेवालों के लिये बल ठहरेगा। ये भी दाखमधु से लड़खड़ाते और मदिरा से लड़खड़ाते हैं। पुजारी और नबी मदिरा से लड़खड़ाते हैं। वे मदिरा से निगल लिये गये हैं। वे मदिरा से लड़खड़ाते हैं। वे दर्शन में लड़खड़ाते हैं। वे निर्णय देते हुए लड़खड़ाते हैं, क्योंकि सभी मेज़ें गंदी उल्टी से भरी हैं और कोई जगह नहीं बची है। इसलिए, गर्वित मुकुट राजकुमारों, पुजारियों और नबियों से बना है। यशायाह उन सभी को एक साथ कैसे रखता है? वे क्या हैं? वहाँ दोहराया गया शब्द क्या है? नशे में! नशे में! उनकी मेज़ें उल्टी से भरी हैं

तो, वह क्या वर्णन कर रहा है? अब बहुत संभव है, यह 1945 की सर्दियों में बर्लिन जैसा था जब वहाँ बहुत बड़ी-बड़ी व्यभिचारी गतिविधियाँ हुई थीं, जब उन्होंने सोचा, ठीक है, हमें रूसियों के यहाँ आने से पहले इस शराब के तहखाने को साफ कर देना चाहिए। तो, वहाँ सचमुच नशे की हालत रही होगी, लेकिन यशायाह उनके बारे में क्या कह रहा है? उनकी हालत क्या थी? विवेक की कमी। हाँ।

हाँ, वे इससे बाहर हैं। आत्म-भोग से।

उनके पास कोई दूरदृष्टि नहीं है। वे घमंडी हैं। यह वही है जो यशायाह दक्षिण में अपने दृष्टिकोण से देखता है कि एप्रैम में क्या हो रहा है।

एप्रैम उत्तरी राज्य में प्रमुख जनजाति है। इसलिए, इस तरह की स्थिति में जहाँ तीनों स्तरों पर नेतृत्व की सख्त ज़रूरत है, वहाँ नशे की लत है। अब, मेरा सवाल यह है कि शारीरिक नशे और आध्यात्मिक नशे के बीच क्या संबंध है? हम पहले ही इनमें से कई विशेषताओं पर बात कर चुके हैं, है न? नंबर एक है सही निर्णय लेने में असमर्थता।

दूसरा, यह पूरी तरह से अपने आनंद पर ध्यान केंद्रित करना है। तीसरा, यह संतुलन खोना है। चौथा, यह वास्तविकता के प्रति अंधापन है।

हकीकत। हाँ। इंद्रियों को सुस्त कर देती है।

ओह बिल्कुल। बिल्कुल। सालों से, उन्होंने खुद को परमेश्वर की सच्चाई के प्रति अंधा कर लिया था, और इसका नतीजा यह हुआ कि वे लड़खड़ा गए।

और इसी तरह यह पंक्ति आगे बढ़ती है: मैं उनके साथ क्या करने जा रहा हूँ? मुझे उनके साथ पहली कक्षा में ही शुरू करना होगा। हिब्रू में काव है v'kav और ऐसा लगता है कि यह रटकर

याद किया गया है। उपदेश पर उपदेश, पंक्ति पर पंक्ति अजीब होठों और विदेशी भाषा वाले लोगों द्वारा।

ये अशशूर के लोग हैं। भगवान कहते हैं कि तुमने मेरी बात नहीं सुनी। शायद तुम अशशूरियों की बात सुनो, और वे तुम्हें वापस खदेड़ देंगे। शुरुआत से शुरू करो। हम कैद में हैं। हम पर वैसे ही अत्याचार हो रहे हैं जैसे मिस्र में थे। हमें कौन छुड़ाएगा? हाँ, हाँ।

नहीं, यह पहलू भी है। यह खत्म हो चुका है। तो, सवाल आपके और मेरे लिए है: हे सोए हुए व्यक्ति, जाग जाइए।

वास्तविकता को देखने के लिए जागें और अपनी आत्मा की स्थिति को देखें। और फिर सीधी रेखा पर चलने में सक्षम हों, जो नशे में धुत व्यक्ति कभी नहीं कर सकता।